[Shri S. Mohan Kumaramangalam]

which is in Andhra Pradesh. To go from Khetri to all those places is not easy, it is not easy to coordinate the work from a place which has not got such good communication facilities such as telex etc. as you have in a place like Calcutta. And the copper market in our country is also mainly in Calcutta. And, therefore, we felt that it was better to co-ordinate the work of copper development from Calcutta than from Khetri. But this will not harm copper development of Khetri in the least. We are not going to stop the development of copper in Khetri by removing the headquarters to Calcutta. This will not mean that a single officer or a single member of the staff in Khetri will be compelled to shift to Calcutta. This will not mean that there will be any less employment in Khetri because the headquarters is a very small headquarters which we have got; it is a co-ordinating headquarters, not an operating headquarters. So what is the harm that has been done to Khetri? Are we not citizens of one country? Let the day come let it come quickly when I will find a person from Rajasthan pleading for Calcutta and a person from Calcutta pleading for Rajasthan. That would lead, with all respect to all hon'ble Members in this House, to a decisive improve in our outlook on our country. We are Indians and looking at it from the point of view . . .

(Interruption by Shri Lokanath Misra) Orissa is not in the picture.

1 P.M.

SHRI LOKANATH MISRA: Charity must begin at home. You must show that example yourself.

SHRI S. MOHAN KUMARAMANGALAM: I do not know when I have not, frankly. I have done my best to try and look at our country as our country, a country to which you and I have the honour and privilege to belong as its citizens. That I would like Mr. Mathur to understand is this is not going to affect copper development in Khetri. It is not going to affect Rajasthan in any way that is harmful to Rajasthan, it is going to help us to develop copper better in the country as a whole.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY): The question is:

"That the Bill be passed."

The motion was adopted.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL (Gujarat): Madam, may we have a recess because after that we are going to joint Committees?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY): We agree to have a recess for half an hour.

SHRI PITAMBER DAS (Uttar Pradesh): There is no pressure of work . . .

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI OM MEHTA): We have so many Bills. We have the I.C.S. Bill . . .

SHRI NAWAL KISHORE (Uttar Pradesh): We would finish the job today even after the lunch recess.

SHRI PITAMBER DAS: So that even if we adjourn for one hour we will have two hours for that Bill.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY): I think we can finish the Legislative Business. We meet at 2 O'clock.

The House then adjourned for lunch at three minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at two of the clock, THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) in the Chair.

REFERENCE TO ALLEGED HUMAN SACRIFICE IN MAHARASHTRA

कुमारी सरोज पुरुषोत्तम खापर्डे (महाराष्ट्र): मिस्टर वाइस चेयरमैन, मैं महाराष्ट्र स्टेट की एक घटना के बारे में आपके सामने थोड़ी सी चर्चा करना चाहूंगी। महाराष्ट्र स्टेट की उप–राजधानी नागपुर शहर से केवल 25 किलोमीटर के अंतर पर सांवनेर नाम की एक तहसील है और उस सांवनेर नाम की तहसील में इरनगांव नाम का एक छोटा सा ग्राम है जिस ग्राम में तारीख 11 अगस्त को एक नव–बौद्ध 24 साल का नौजवान लड़का जिसकी सवर्ण हिन्दुओं की अंध–श्रद्धा के कारण नर–बलि चढ़ायी गई है। उसके बारे में मैं सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी। संक्षेप में मैं आपको उसकी कहानी बताऊंगी। उस ग्राम में करीब-करीब 75 या 80 घर होंगे जिन में 20 या 25 घर शेड्यूल्ड कास्ट वालों के हैं जो कि नव-बौद्ध कहलाते हैं। उस गांव में कुनबियों की संख्या अधिक परिमाण में है। उसी गांव के रहने वाले रामदास मारूती नारनौरे नाम का 24 वर्ष का लड़का—किसी के लेने न देने में, जिसका काम अपना कमाना, अपनी खेती करना, अपना खाना

और मौज मे रहना, और उसकी गांव मे किसी से कोई दुश्मनी नही—उसको एक मोरवा नाम का एक कुनबी जिसके आंग मे अधोरी नाम का एक देवता होता है वही शायद आया और उसने कहा कि इस इरनगाव मे दो–चार दिन से जो हैजा फैला हुआ है, जो कालरा फैला हुआ है, उस कालरा में एक महिला और एक पुरुष की जो मृत्यु हुई है इसका सही कारण यह है कि इस गांव मे राम दास मारूती नारनौर तथा शामराव चापले ये दो व्यक्ति जादू करने वाले है और उन लोगों ने सारे गांव की सीमाए जादू से बाधी हुई है । और उन्ही के कारण यहा पर यह दो लोगों की मृत्यु हुई । उस देवता ने यह कहा कि बगैर शामराव और रामदास के नरबलि चढाये यह गांव हैजे से मुक्त नही हो सकता है और उनकी नरबलि चढाना बहुत आवश्यक है । शामराव दो दिन पहले गांव छोड़कर चला गया था । एक दिन शाम के समय 8 अगस्त को—गाव के देहाती जीवन के बारे में आप सब लोगो को मालूम ही है—हनुमान मंदिर के आसपास जहा बौद्ध लोग शामिल हुए, वहां पर मेजारिटी लोग भी शामिल हुए । मारूती के बदन मे देवता फिर आया और उसने कहा कि अगर तुम इन दो आदमियो को नर बलि नही चढाते हो तो आपका गांव आठ दिन के बाद बिल्कुल तबाह हो जायेगा, और एक भी आदमी जीवित नही बचेगा, इसलिये नरबलि चढ़ाना बहुत आवश्यक है । अगर तुम ऐसा नही करते हो तो तुम्हे पांच बकरों की बलि देनी होगी । लेकिन रामदास का बाप मारूती जो एक सीधा सादा आदमी था और कबीरपंथी था, ये लोग कभी भी मांस को छूते नही है, उसने कहा मेरे पास कुछ नही है, 200, 300 रुपये है, इन रुपयों से चाहे तुम मुर्गा लाओ या बकरे लाओ और उन्हें तुम काटो, मुझे इस बारे में कोई एतराज नही होगा । लेकिन फिर भी वे लोग नही माने ।

दूसरे दिन 9 तारीख को, फिर एक सभा हुई उस गांव के पटेल के वहां हुई और फिर यह कहा गया कि अगर नरबलि नही चढायी जाती है तो हमारा सारा गांव सूना हो जायेगा और उस गांव में कोई जिन्दा नही रहेगा । इसलिये यह आवश्यक है कि शामराव और रामदास की बलि चढ़ायी जाय । यह बात सारे लोगों ने कही । मारूती जब अपनी बीवी से मिल रहा था तो उसने अपनी बीवी सकू से कहा कि मै अब दुबारा लौट कर नही आऊगा, मेरी तुम्हारे साथ यह अतिम मुलाकात है । तुम मेरी अमानत जो तुम्हारे पास चार साल का बच्चा है उसको अच्छी तरह से सम्भालना । इतना कहने के बाद उसने कहा कि तुम मुझे एक गिलास पानी पिला दो । अपनी बीवी के हाथ से पानी मारूती ने लिया तो इसी बीच घर के पीछे के दरवाजे से बलि चढाने वाले लोग आ गये और उसको गांव के मुखिया के घर ले जाने के बहाने से उठाकर ले गये । वह उससे कहने लगे कि अगर मुखिया कहता है कि उसकी नरबलि से इस गांव का हैजा खत्म हो जाता है तो उसकी नरबलि चढ़ायी जायेगी । अगर वह यह कहता है कि इसकी नरबलि नही चढ़ायी जायेगी तो उसको छोड दिया जायेगा । यह कह कर वे लोग उसको जबरदस्ती ले गये और गांव के कुएं के पास उसके दो हाथ, दो पैर बांधे और कान तथा नाक को काट कर उसको कुएं के अन्दर धकेल दिया ।

यह घटना 11 तारीख की रात को हुई । जब वह 11 तारीख की रात को अपने घर नहीं पहुंचा, तो उसका बाप बहुत घबराया कि मेरा बेटा क्यों नही आया । क्या उसकी बलि तो नही चढ़ा दी गई है । इस बात को सोचकर वह बहुत परेशान हुआ, बेचैन हुआ । 11 तारीख की रात को उसको स्वप्न हुआ कि उसके लडके का खून कर दिया गया है । बाप इस तरह का स्वप्न देखकर घबराहट से उठा, लेकिन उसने यह बात किसी से नही कही । 11 अगस्त को जिस दिन यह घटना हुई उसके दो दिन तक यानी 12, 13 तारीख तक, यह बात गांव में फैल गई कि उसका लड़का घर वापस नही पहुचा है । 13 तारीख के दिन उसका भाई उस गांव से पास हो रहा था, तो रास्ते मे कुए मे उसने झांका कि कही मेरा भाई तो यहा पर मारा हुआ नही है । जब उसने कुएं

[कुमारी सरोज पुरुषोत्तम खापर्डे]

के अन्दर देखा तो उसने अपने भाई की लाश को देखा, हाथ पैर बधे देखे, कमर उल्टी थी और कपडो से वह अपने भाई को पहिचान गया । 13 अगस्त को सावनेर पुलिस स्टेशन पर रिपोर्ट दी जाती है । वहा पुलिस इस्पैक्टर मिस्टर काले थे, वे कहत है कि मै तुम्हारी यह रिपोर्ट नही ले सकता, यह गलत रिपोर्ट है, रिपोर्ट नही ली गई । 14 अगस्त की शाम को पुलिस वाले वहा पहुचे । घरवालो ने माग की कि लाश निकालिये । पुलिस वालो ने कहा . .

उपसभाध्यक्ष (श्री वी०बी० राजू): आप बहुत डिटेल्स मे जा रही है, जल्दी समाप्त करिये ।

कुमारी सरोज पुरुषोत्तम खापर्डे: पुलिस वालो ने कहा कि शाम का समय है अभी निकाल नही सकते । यह कह कर वह बौडी निकाली नही गई । 15 अगस्त को सुबह वह लाश निकाली जाती है और पचनामा यह होता है कि उसने सुसाइड कर लिया । लेकिन यह घटना प्रि-प्लाड थी और उसका मर्डर हुआ ।

महाराष्ट्र की जनता, विशेषत हरिजन जनता, बौद्ध जनता महाराष्ट्र के गृह मत्रालय पर भरोसा नही करती इसलिये मै सरकार से यह कहूगी कि इसकी अदालती जाच करवाई जाय । इतना ही नही आप दोनो सदनो के मेम्बर्स को स्पाट पर स्टडी करने के लिये कहिए कि क्या फैक्ट्स एड फिगर्स है । यही मेरी माग है । वह लाश आज तक, अभी तक नागपुर मैडिकल कालेज होस्पिटल की लेबोरेटरी मे पडी हुई है । इसमे जरा भी असत्य नही है ।

REFERENCE TO CASTING ASPERSION ON PUBLIC UNDERTAKINGS COMMITTEE OF PARLIAMENT BY AN I C S. OFFICER

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal) There is a matter which concerns the privilege of the House It is not a privilege motion that I want to bring Today is the last day and I think I will be failing in my duty if I do not bring it to your knowledge The House will adjourn today for two months and unfortunately there is no remedy for us For want of time I cannot bring in a motion This does not involve me personally But it concerns the House because the Public Undertakings Committee has been very badly commented upon by Shri P R Nayak, a former I C S officer in a letter to Shri Khera who has filed an affidavit with the Takru Inquiry Commission in which Shri Nayak has cast reflection on the Public Undertakings Committee He says that certain persons had joined together to induce the Parliamentary Committee on Public Undertakings to write a report in April 1970 questioning the decisions and *bona fides* of Government, the Indian Refineries Ltd , and in the main of myself as Managing Director/Chairman of the Indian Refineries Ltd from December 1960 to August 1964 Following this report Government appointed a Commission of Inquiry in August, 1970 This is from the letter which Shri Khera has filed before the Takru Inquiry Commission and there Shri Khera has quoted from Shri Nayak's letter dated 27th February, 1971 All that I want to ask is this Is it permissible for a former I C S Officer to write in a letter to another I C S Officer that the Public Undertakings Committee has been induced by some gentlemen against me, etc Shri Khera was the Cabinet Secretary He quotes from a letter of Shri Nayak and files it before the Inquiry Commission headed by Justice Takru This is in Shri Khera's own affidavit On this basis I am saying this I will only request you to kindly instruct your officer to collect all the materials I have got the full text of the affidavit This is taken up in the other House and this should not be allowed to go without being looked into by the two Houses of Parliament If civil servants start casting reflection in this manner on Parliamentary Committees accusing them of having been induced by some people from outside, then I do not know how we are going to function here

Mr Nayak has abused his authority and so also Mr Khera

THE VICE CHAIRMAN (SHRI V B RAJU) Yes it has been taken note of Let us now take up the Former Secretary of State Service Officers (Conditions of Service) Bill 1972

THE FORMER SECRETARY OF STATE SERVICE OFFICERS (CONDITIONS OF SERVICE) BILL, 1972

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI K C PANT) Sir I beg to move

"That the Bill to provide for the variation or revocation of the conditions of service of former Secretary of State